प्रेम का रंग

एक ऐसे संसार में सामंजस्य जहाँ तनाव, संघर्ष, पक्षपात और हिंसा व्याप्त हो—जैसा कि हम आज जी रहे हैं? असंभव! आप सोच सकते हैं। जब पक्षपात, भय और अविश्वास सदियों से मनुष्य में जड़े जमाए हुए हैं, तो इन्हें कैसे दूर किया जा सकता है? इसका उत्तर एक सरल शब्द में है: प्रेम!

यह सुनने में एक महान आदर्श लगता है, और वास्तविकता में कितने लोग अचानक ही द्वेष, घृणा, भय या अन्य गहरी जमी नकारात्मक भावनाओं को छोड़ सकते हैं—जो वे किसी व्यक्ति या पूरे समूह के प्रति रखते हैं?

अच्छी बात यह है कि हमारी सीमित मानवीय क्षमताओं के बावजूद भी यह संभव है कि हम दूसरों से प्रेम करें और उनका सम्मान करें—चाहे उनका या हमारा अतीत अथवा पृष्ठभूमि कुछ भी हो। इस प्रकार के प्रेम की कुंजी परम प्रेम के स्रोत—स्वयं परमेश्वर से आती है। बाइबिल बताती है कि "परमेश्वर प्रेम है" (1 यूहन्ना 4:8)। वही इस सृष्टि के रचयिता हैं, जिन्होंने हम सबको अस्तित्व में लाया।

हमें यह दिखाने के लिए कि वह कैसा है, परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु मसीह को मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर भेजा। यीशु ने मानवीय पीड़ा को अनुभव किया और लोगों की आत्मिक और शारीरिक आवश्यकताओं की सेवा करते हुए उन पर दया की।

यीशु ने सिखाया कि परमेश्वर की सारी आज्ञाएँ एक महान आज्ञा पर आधारित हैं: प्रेम करना। यीशु ने कहा, "तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे हृदय, अपनी सारी आत्मा और अपनी सारी बुद्धि से प्रेम करना" और "तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करना" (मत्ती 22:37-40)।

एक धार्मिक विशेषज्ञ ने यीशु की यह शिक्षा सुनी और सार्वजनिक रूप से उनसे पूछा, "तो मेरा पड़ोसी कौन है?" इसके उत्तर में यीशु ने भले सामरी का दृष्टांत सुनाया, जिसमें स्पष्ट किया कि हमारा पड़ोसी कोई भी है जिसे हमारी सहायता की आवश्यकता है—चाहे उसकी जाति, धर्म, वंश या राष्ट्रीयता कुछ भी हो (लूका 10:25-37)। जब हम अपने जीवन को परमेश्वर की मानवता के लिए दृष्टि के अनुरूप ढालते हैं, तब हम भी दूसरों में भिन्नताओं से परे उनकी गरिमा और मूल्य को देख सकते हैं—क्योंकि वे भी परमेश्वर की छवि में रचे गए हैं।

क्या अद्भुत संसार होगा यदि हम जब किसी दूसरे जातीय पृष्ठभूमि वाले व्यक्ति को देखें, तो केवल यह देखें कि परमेश्वर उनसे प्रेम करता है! यह संभव है—यीशु में—जहाँ "न कोई यहूदी है, न यूनानी; न कोई दास है, न स्वतंत्र; न कोई पुरुष है, न स्त्री; क्योंकि आप सब मसीह यीशु में एक हैं" (गलातियों 3:28)। हम परमेश्वर से दूसरों के लिए उसका प्रेम माँगकर अपने पड़ोसियों से प्रेम करना और संसार में शांति लाने का भागीदार बनना सीख सकते हैं।

बाइबिल कहती है: "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा [आपसे और मुझसे], कि उसने अपना एकलौता पुत्र [यीशु] दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परंतु अनन्त जीवन पाए" (यूहन्ना 3:16)।

यदि आप यीशु से अपने हृदय में आने की प्रार्थना करेंगे, तो वह आपके सब पाप क्षमा करेगा और आपको स्वर्ग में अनन्त जीवन देगा। आप अभी उसे ग्रहण कर सकते हैं, एक सच्चे हृदय से इस प्रकार प्रार्थना करके:

प्रिय यीशु, मैं आपको जानना चाहता/चाहती हूँ। मेरे लिए अपना जीवन देने के लिए धन्यवाद। कृपया मेरे सारे पाप क्षमा करें। मैं आपसे निवेदन करता/करती हूँ कि मेरे हृदय और जीवन में आकर मुझे अनन्त जीवन का यह मुक्त उपहार दें। मुझे अपने प्रेम से भर दें और मेरी सहायता करें कि मैं दूसरों के प्रति अधिक सहनशील हो सकूँ और उन्हें उसी रूप में देख सकूँ जैसे वे हैं—आपकी अनोखी रचना, जो गरिमा और सम्मान के योग्य है। आमीन।

© 2022 Activated

To learn more, visit our website at: https://activated.org/en/.